डॉ. रंजना वर्मा

जन्मतिथि- 15.01.1952
जन्मस्थान - जौनपुर (उ. प्र.)
पिता का नाम- स्व. श्री गोविंद प्रसाद श्रीवास्तव
माता का नाम- स्व. श्रीमती सावित्री देवी श्रीवास्तव
मोबाइल नम्बर - 7507234659

विरहानल में जल रही, सह भीषण अभिशाप ।
राम नाम की मुद्रिका, लेकर आये आप ।
लेकर आये आप, राह अब सरल बनेगी ।
प्रभु - चरणों से दूर, प्रीति पर अटल बनेगी ।
रघुकुल - भूषण राम, रहें मन में हर पल में ।
बचे रहेंगे प्राण, जल रही विरहानल में ।।

****

मिली अँगूठी राम की, ले आये हनुमान ।
विरह अवधि में अब यही, जीवन की पहचान ।
जीवन की पहचान, प्रीति करुणानिधान की ।
बहा हर्ष के अश्रु, रुदन कर रही जानकी ।
गये प्राणप्रिय भूल, कल्पना थी वह झूठी ।
बनी अवधि आधार, राम की मिली अँगूठी ।।

****

चढ़ी हिंडोले डालियां, झुला रहा है वात ।
जादू की जाली बुने,फिर पूनम की रात ।
फिर पूनम की रात, पत्तियों से छन छन कर।
करे नवल सिंगार, चांदनी गोरी बन कर।
चुरा रही है चित्त, रूपसी यह बिन बोले।
करती सुख आह्वान, चंद्रिका चढ़ी हिंडोले।।

****

बचपन की किलकारियां, वह मीठी सी याद ।
फिर से हम जी लें चलो, बहुत दिनों के बाद ।
बहुत दिनों के बाद, चलो खोलें दरवाजा ।
बंद रही जो याद, कहें फिर सम्मुख आजा ।
छूट न जाये साथ, न हो साथी से अनबन ।
यादों की सौगात, मिली फिर जी लें बचपन ।।

****

व्याकुल मन से सोचती, नीलांबर को देख ।
पढ़ न सका कोई कभी, क्रूर नियति का लेख ।
क्रूर नियति का लेख, न आगत जाये जाना ।
सुख या दुख आघात, उसे ही सहे जमाना ।
बन जाते हैं शत्रु, सदा संबंधी मातुल ।
देते रहते दुक्ख, किया करते मन व्याकुल ।।

****

झोली भरी गुलाल से, उड़ी रंग की धार ।
हृदय तरंगित कर रहा, होली का त्यौहार ।
होली का त्यौहार, थाप पड़ रही ढोल पर ।
थिरक रहे हैं पांव, होलिका गीत बोल पर ।
भर उमंग से लोग, भंग की खायी गोली ।
भेद भाव सब भूल, रंग भर लाये झोली ।।

****

आँखों में जागा करे, नित सपना सुकुमार ।
व्यर्थ न होने दें मगर, जीवन के दिन चार ।
शैशव बचपन काल, नित्य डूबे सपनों में ।
यौवन में जग भूल, रहे खोये अपनों में ।
ज्यों पानी की बूंद, न ठहरें खग पाँखों में ।
आँसू - से दिन रैन, ठहरते कब आँखों में ।।

****

बजती मनहर बांसुरी, बिखराती प्रिय गीत ।
कृष्ण कुशल मन-हरण में, बना सभी का मीत ।
बना सभी का मीत, सदा आनंद लुटाता ।
प्यार भरा यह ढंग, सभी के मन को भाता ।
बरसाता नभ नेह, धरा हरि हित है सजती ।
ले राधा की प्रीत, कृष्ण की वंशी बजती ।।

****

आया सावन मास शुभ, शंकर का प्रिय वार ।
नील गगन से घन सघन, बरसाता जल-धार ।
बरसाता जल - धार, शंभु को है नहलाता ।
बेल - पत्र मंदार, आक निज सुमन चढ़ाता ।
करिए व्रत उपवास, मास सब के मनभाया ।
शिव जी का श्रृंगार, कराने सावन आया ।।

****

अवध पुरी में आ गये, रघुनंदन श्रीराम ।
पावन धरती हो गई, मंगलमय यह धाम ।
मंगलमय यह धाम, राम आ गए नगर में ।
करने पूरण काम, सिया संग आए घर में ।
रहा उपेक्षित ब्रह्म, रहा जो सदा धुरी में ।
करने जन कल्याण, पधारा अवधपुरी में ॥

****